डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स० प्रा० मैथिली विभाग
सी०एम०जे०कॉलेज
दोनवारी हाट खुटौना
मो०न०9546743796
Email- mishrasm966@gmail.com
B.A.|||

काव्यक कारण

2. व्युत्पत्ति :-

व्युत्पत्तिक अर्थ अछि पाण्डित्य वा विद्वता। एकरा दोसर शब्दमे संस्कार मार्जन सेहो कहल जा सकैत अछि। संस्कार मार्जनक मूल हेतु शास्त्र ज्ञान अछि । व्युत्पत्ति स्वरूप आ परिभाषा क विवेचना विभिन्न काव्यशास्त्री विभिन्न रूपमे कएलनि अछि।

रुद्रटक अनुसार छन्द , व्याकरण , कला , लोकस्थिति एवं पदार्थज्ञान सँ
उत्पन्न उचितानुचित विवेकक नाम व्युत्पत्ति थिक।

मम्मट व्युत्पत्तिक हेतु निपुणताक प्रयोग कएलनि अछि आ ई निपुणता बरोबरि जगत कें देखला एवं काव्यशास्त्र आदिक सम्यक अध्ययन सँ प्राप्त होइत अछि । राजशेखर कहैत छथि जे वर्णनीय आ अवर्णनीयक प्रति विवेक व्युत्पत्ति थिक - "उचितानुचित विवेकोव्युत्पत्ति: । "

भारतीय आचार्य वामन व्युत्पत्ति कें प्रतिभा सँ श्रेष्ठ मानैत छथि। एहि मतक अनुयायी पाश्चात्य विद्वान अरस्तु आ होरेस सेहो छथि मुदा राजशेखर क मत मे प्रतिभा आ व्युत्पत्ति समवेत रूपमे श्रेयस्कर अछि। मम्मट सेहो दुनूक महत्व कें स्वीकार कएलनि अछि । हुनक कथन छनि जे व्युत्पत्ति (निपुणता) ओ थिक जे लोक कें अर्थात छन्द , व्याकरण , निरुक्त , चौसठिकला , पुरुषार्थ चतुष्टय , गज - तुरगादिप्राणी विद्या तथा धनुर्वेदादि विद्या सभक प्रतिपादक ग्रंथ सभक अध्ययन आ अनुसंधान काव्य सभक अर्थात महाकवि सभक कृति सभक मनन चिंतन आ संगहि संग इतिहासादिक निरीक्षण आ विवेचनक परिणाम थिक।

अचार्य मम्मटक उपर्युक्त कथन सर्वथा उपयुक्त अछि । वुडवर्थ नामक मनोवैज्ञानिक काव्य सृजन मे वंशानुगत गुण तथा वातावरण कें महत्व देलनि अछि। इएह वंशानुगत गुण प्रतिभा आदि आ वातावरण द्वारा काव्य सृजन मे निपुण होइत अछि। प्रतिभाशालीक सम्मुख जँ लोकज्ञान तथा ज्ञानशास्त्र प्राप्त करबाक वातावरण नहि रहल त ओकर प्रतिभा पड़ले रहि जाएत अतएव कवि प्रतिभा सँ जन्मजात भए सकैत अछि मुदा ओकर समुचित विकास विना व्युत्पत्ति सँ नहि भए सकैत अछि।

3. अभ्यास :-

काव्यक तेसर हेतु अभ्यास अछि। गुरुक शिक्षा आ काव्य मे संशोधन आदि कें अभ्यास कहैत अछि। राजशेखर निरन्तर प्रयास कें अभ्यास कहलनि अछि - " अविच्छेदेन शीलनभ्यास: ।" दंडी सेहो एकनिष्ट श्रमकें अभ्यास कहलनि अछि। मम्मट काव्य हेतुक अंतर्गत अभ्यासक तात्पर्य कें स्पष्ट करैत कहैत छथि जे काव्य रचना ओ ओकर मूल्यांकन मे जे दक्ष अछि ओकर निर्देशानुसार काव्यमय सन्दर्भ सभक रचना एवं तदनुकूल पदयोजनक लेल जे सदिखन परिश्रम कएल जाइत अछि वैह अभ्यास अछि - " काव्यं कर्तुं विचारयितुंचये जानन्ति तदुपदेशेन कारण योजने पौन पुण्येन प्रवृत्ति। "

अचार्य भामहक सेहो उएह मत छनि । ओ अभ्यासक संग संग ओकर महत्व सेहो प्रतिपादित करैत छथि । एहि क्रममे देखल जाइत अछि जे दंडी अभ्यास कें बहुत महत्व देलनि अछि । हुनक त कथन छनि जे सहज प्रतिभाक अभाव मे सेहो अभ्यास लाभप्रद होइत अछि । अचार्य दंडीक कथन छनि जे नैसर्गिकी प्रतिभा , अध्ययन आ श्रवण आदि तथा ओकर अभ्यास काव्य कारण अछि -

" नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम ।
अमन्दाश्चाभियोगोस्या: कारणं काव्य संपद:"

वाग्भट्ट सेहो तीनू काव्य हेतुक समन्वित रूपकें स्वीकार करैत छथि ।

अस्तु भामह , वामन , राजशेखर , दंडी , वाग्भट्ट आदि आचार्यगण अभ्यासक अस्तित्व कें प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपमे स्वीकार करबे कएलनि अछि । अतएव काव्य सृजन मे एक प्रमुख काव्य हेतु अभ्यास अछि ।

4. समाधि :-

आचार्य श्यामदेव समाधि कें काव्यक हेतु मानैत छथि - " काव्य कर्मणि कवे: समाधि परं व्याप्रियते । " अर्थात काव्य कर्ममे कविक समाधि सर्वोत्कृष्ट साधन अछि । राजशेखर समाधि एवं अभ्यास सँ उत्पन्न शक्ति कें काव्यक प्रधान कारण मानैत छथि । वामन समाधि कें अवधान शब्द सँ अविहित कएलनि अछि । " चित्तैकाग्रमवधानम ।"

समाधिक संबंधमे विवेचना कएला सँ ई ज्ञात होइत अछि जे समाधिक अस्तित्व कें एके दू गोट काव्यशास्त्री स्वीकार करैत छथि । एकर अतिरिक्त समाधि अभ्यासहिक प्रतिरूप अछि । अतएव समाधिक अस्तित्व अभ्यास काव्य हेतुमे समाहित भए जाइत अछि ।

एतावता उपर्युक्त विवेचन सँ ज्ञात होइत अछि जे काव्य हेतु प्रतिभा , व्युत्पत्ति आ अभ्यास अछि । ई तीनू समन्वित रूपमे काव्य सृजनमे योगदान दैत अछि ।